आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : बारहवां | अप्रैल -2014

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
रेनू सचदेवा,
सुमन आनन्द
व
परमजीत सिंह

5 सवाल-जवाब
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

7 आदर्श शादी
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
सतसंग परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज (16 पी.एस. आश्रम राजस्थान)

33 सावन प्यारे बख्शनहारे
(एक शब्द)

34 धन्य अजायब
दिल्ली में सतसंग के कार्यक्रम की जानकारी

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल2014 -145- **मूल्य - पाँच रुपये**

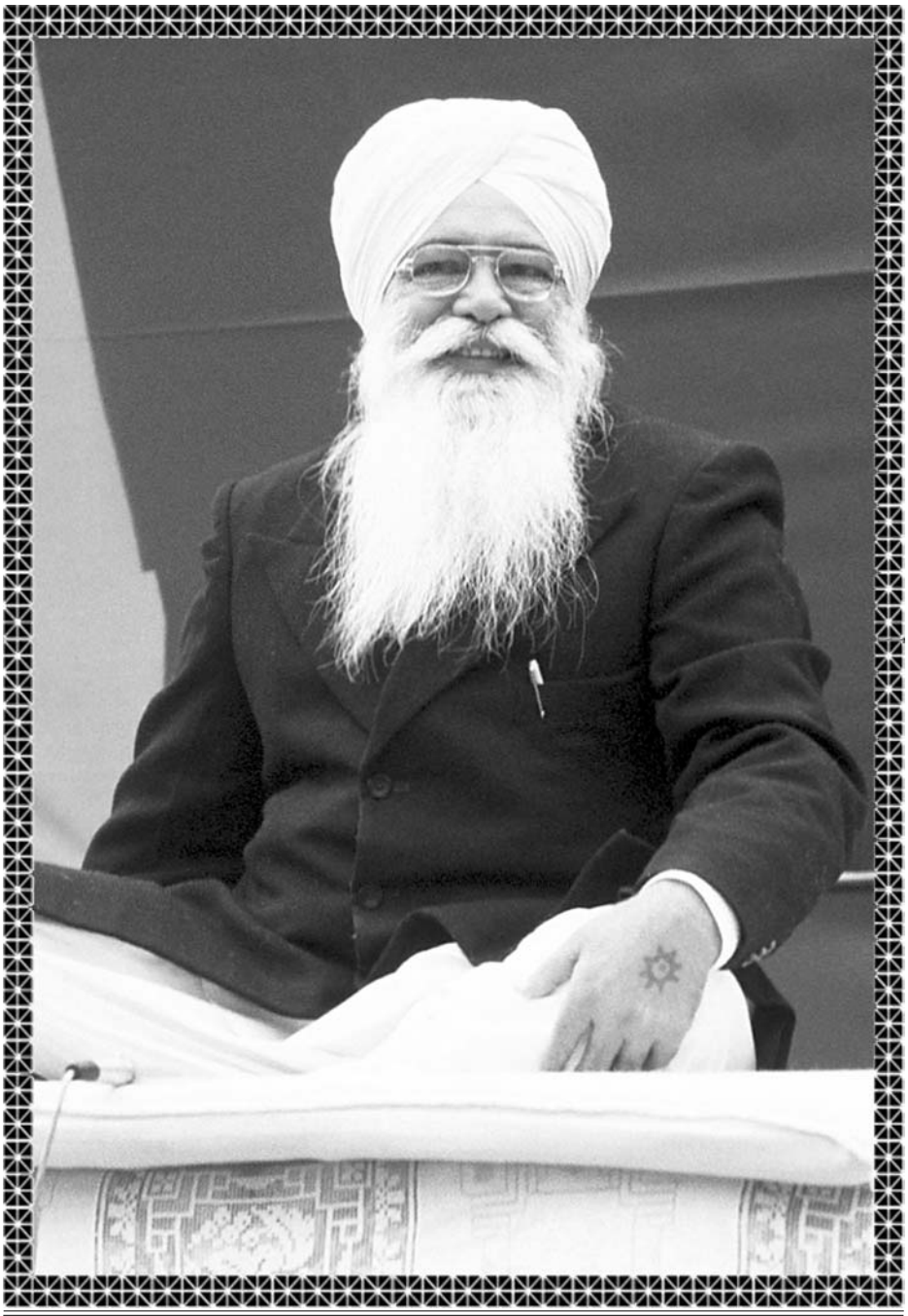

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *आपके हाथ पर जो निशान है यह निशान आपको कब और कैसे प्राप्त हुआ?*

बाबा जी: हाँ भई! सन्त बानी मैगजीन में इसके बारे में बहुत कुछ छप चुका है। मुझे अफसोस है कि माता-पिता मैगजीन नहीं पढ़ते और बच्चों को भी नहीं सुनाते।

बचपन में मेरे शरीर पर ज्यादा से ज्यादा फोड़े की शक्ल में कुछ ऐसी चीज़ उठी जिसमें काफी पाक भर गई। शरीर पर एक तरह का कोढ़ जैसा बन गया, शरीर का कोई भी हिस्सा खाली न बचा। काफी दवाईयाँ भी ली। मैं हिंदुस्तान के ज्यादा से ज्यादा तीर्थों पर गया लेकिन कोई आराम नहीं आया। जब मेरे कपड़े उन फोड़ो पर लग जाते तो मैं दर्द की वजह से बहुत रोता-चिल्लाता। कोई मेरे पास खड़ा नहीं होता था, हर कोई मुझसे घृणा करता था।

आखिर मेरे पिताजी मुझे बाबा बिशनदास जी के पास लेकर गए। उस समय मेरा बाबा बिशनदास से मिलाप हुआ। पिताजी ने मेरी हालत के बारे में बताया तो बाबा बिशनदास ने दया करके कहा, ''कुदरत को यही मंजूर है कि इसके शरीर में कुछ निशान डालने होंगे।'' पहले आप यही निशान मेरे माथे पर डालने लगे तो पिताजी ने रोकर कहा, ''यह हमारा एक ही बच्चा है। आप ऐसा न करें देखने में भद्दा लगेगा।'' फिर बाबा बिशनदास ने बहुत सोचने के बाद कहा कि पंजाब में तख्तूपुरा एक तीर्थ स्थान है अगर आप वहाँ चलें तो मैं आपको वहाँ कोई सुझाव दूंगा।

सन्त-सतगुरु सेवक का काम तो करते हैं लेकिन जाहिर नहीं करते कि मैंने किया है। उन दिनों मुझे काफी तकलीफ थी। जब हम वहाँ गए तो बाबा बिशन दास ने यह निशान मेरे शरीर पर डलवाए। उसके बाद मैं चार मील चलकर गाँव चक्क सेदो आया। मेरा शरीर बिल्कुल साफ हो गया, कोई पाक नहीं निकल रही थी मुझे कोई तकलीफ नहीं हो रही थी। यह सब बाबा बिशनदास जी की ही दया थी कि आपके सामने यह साफ शरीर बैठा है। मैंने कोई दवाई नहीं की, यह सब बाबा बिशनदास जी की दया से हुआ।

तख्तूपुरा में गुरु नानकदेव जी ने जमीन के अंदर बैठकर कुछ समय अभ्यास किया था। मेरे माता-पिता ने मेरा नाम सरदारा सिंह रखा था। उस दिन बाबा बिशनदास जी ने मेरा नाम अजायब सिंह रख दिया। आपने कहा कि सरदारा सिंह नाम का महातम ठीक नहीं, अब तू सोहना सिंह बन गया है इसलिए उन्होंने मेरा नाम अजायब सिंह रख दिया। अब मैं अपने हस्ताक्षर अजायब सिंह के नाम से ही करता हूँ।

पंजाब की जायदाद में अब तक मेरा नाम सरदारा सिंह ही चलता है। पिछले दिनों पंजाब में मेरी काफी जमीन गवर्मेंट छावनी के कब्जे में आई हुई थी। जब मैं पंजाब में अपनी जमीन के पैसे लेने गया तो मैंने अपने हाथ पर सरदारा सिंह लिखकर रखा ताकि मैं हस्ताक्षर करते समय अजायब सिंह के हस्ताक्षर न कर दूँ।

मेरे कहने का भाव सन्त-सतगुरु हमेशा अपने बच्चों पर दया करते है, मेहर करते हैं लेकिन उसका अहसान नहीं जताते।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आदर्श शादी

गुरु नानकदेव जी की बानी

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम और दया की है। संसार में बैसाखी का पवित्र दिन किसी न किसी रूप में मनाते हैं। सिक्ख इतिहास में आज के दिन की खास महानता है। आज के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने हमारी सोई हुई आत्माओं को जगाया। आत्माएं पत्थर को पूजकर पत्थर हो चुकी थी, प्रभु को भूल चुकी थी।

गुरु गोबिंद सिंह जी ने दुनिया में रहने और जीने का ढ़ंग बताया कि इंसान का जामा अमोलक है। दुनिया में सबसे बड़ा पाप डरना है; वही डरता है जो ऐब करता है और वही डराता है जिसके अंदर अहंकार हो। डरना और डराना दोनों ही महापाप हैं। गुरु साहब कहते हैः

भय काहू को दे नेह भय मानत आन।

प्यारेयो! आज आपको 'नामदान' की जो वस्तु मिली है यह परंपरा से चली आ रही है। इतिहास गवाह है कि गुरु नानकदेव जी ने भी अपने सेवकों को देखा कि इनमें से कितने सेवक मेरी बताई हुई युक्ति के मुताबिक अंदर जाते हैं और मेरी तालीम को समझते हैं। वही समझता है जिसने गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लिया हो। उस समय सारी संगत में से सिर्फ एक भाई लैहणा ही पास हुआ था। सतगुरु ने जिन्हें नाम दिया है बेशक उन सबको ले जाना है लेकिन बहादुरी उन्हीं की है जो सतगुरु के जीते जी सतगुरु की तालीम पर अमल करके पास हो जाते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने जिन लोगों को नाम दिया था उनकी परख के लिए आज बैसाखी का दिन चुन लिया कि देखूं! कितने आदमी मेरी तालीम को समझते हैं, कितने आदमी भजन-सिमरन करते हैं कि गुरु क्या है, नाम क्या है? ऐसा नहीं कि कान में फूँक मार देने से शिष्य बन जाता है।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी ने शिष्यों की परख की इतिहासकारों ने उस समय पाँच हजार का इकट्ठ लिखा है। सिक्खों का इतिहास तो एक सौ चालीस साल बाद लिखा गया है। विदेशियों ने भी इस बात की गवाही भरी है कि पाँच हजार के इकट्ठ में किसी जाति-पाति का मसला नहीं था। कोई भी सन्त न तो कोई नई जाति बनाता है और न ही पहले की बनी हुई किसी जाति को तोड़ता है। उस पाँच हजार के इकट्ठ में से सिर्फ पाँच शिष्य ही पास हुए थे। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने उन पाँचों को तवज्जो देकर अपना ही रूप बना लिया।

मैं बताया करता हूँ कि जब मैंने सिग्नेलर का कोर्स किया उस समय हमारे उस्ताद बहुत सख्त थे। वे कहते कि आप अपने बिस्तर में रस्सी डालकर आएं क्योंकि हम आपको मामूली गलती करने पर भी निकाल देंगे। जब हमने उन उस्तादों की ताबेदारी की तो एक दिन ऐसा भी आया जब उन्होंने हमें सर्टिफिकेट दिए और प्यार से अपने साथ बिठाकर चाय-पानी भी पिलाया और कहा, ''अब आपमें और हममे कोई फर्क नहीं है। जो डिग्री हमारे पास है वही डिग्री आपके पास है।''

इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी ने पास हुए पाँच प्यारों को पूर्ण तवज्जो देकर अपने जैसा बना लिया। सन्त का मन तभी खुश होता है जब उनका कोई सेवक मन इन्द्रियों की गुलामी से छूट

जाता है। आज के पवित्र दिन की बहुत महानता है। हम अपने ऊँचे भाग्य समझते हैं कि हमें आज के दिन उन महान सन्त-सतगुरुओं को याद करने का मौका मिल रहा है। हम उनकी याद में बैठे हैं। बानी में लिखा हैः

सन्त सन्त को दो कर जानी, सो जन जान नर्क की खानि।

गुरु नानकदेव जी और गुरु गोबिंद सिंह जी एक ही थे। जो सन्त सच्चखंड से आते हैं वे सहेलियां होते हैं, उनका आपस में प्यार होता है। गुरु नानकदेव जी उसे सन्त मंडल कहते हैंः

सन्तमंडल ऊँहा का नाओं, दूख अंधेरा नहीं तह ठाओं।

वह सन्तों का देश है वहाँ दिन-रात का फर्क नहीं। वेद-शास्त्र का झमेला नहीं, वहाँ मौत और पैदाईश नहीं। हम लोग सन्तों में फर्क निकालते हैं क्योंकि हम भजन के चोर हैं। हम भजन नहीं करते उस मंजिल पर नहीं पहुँचते। किसी भी सन्त ने हमें यह नहीं बताया कि आपको परमात्मा जंगलो पहाड़ो में मिलेगा, भेष बदलने से या लम्बी चौड़ी तकरीरें करने से मिलेगा।

हमें इस बात का गर्व है कि बड़े-बड़े महान सन्त-सतगुरु पैदा हुए। महाराज सावन सिंह जी कोई नया समाज बनाने के लिए नहीं आए थे, आपने भी गुरु नानकदेव जी, गुरु गोबिंद सिंह जी, कबीर साहब, रविदास और दस गुरुओं की तालीम को ताजा किया।

अगर कोई महात्मा एक भ्रम निकालता है तो हम लोग बीस-पच्चीस भ्रम और डालकर बैठ जाते हैं फिर परमात्मा किसी और महात्मा को भेजता है वह महात्मा आकर हमारे आगे कोई नई चीज नहीं रखता वह उसी तालीम को ताजा कर जाता है। महात्मा कहते हैं देखो भाई! आप वेद-शास्त्र पढ़कर देख लें कि वेद यही कहते हैं कि हम सबका परमात्मा एक है और वह सबको अंदर से

ही मिलता है। जब हम परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं फिर वह हमें बाहर कण-कण में नजर आता हैं। यह सब कायनात उस परमात्मा की है लेकिन पहले हमें इस शरीर-लेबोट्ररी के अंदर जाकर तजुर्बा जरूर करना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी हमेशा ही महाराज कृपाल से कहते रहे, ''ऐसा ग्राऊंड तैयार करो जहाँ हर मुल्क और हर जाति का इंसान बिना किसी भेदभाव के बैठ सके।'' सन्त जब संसार में आते हैं ऐसा ही ग्राऊंड बनाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी ने भी कहा हैः

होय एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाई।
हर नामें की होवो जोड़ी, गुरुमुख बैठो सफा बिछाए।।

आप एकत्र होकर बैठें। आप भूल गए हैं परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा, वह सबका है। सबकी एक ही तरीके से पैदाईश और मौत होती है। सबकी एक जैसी आँख, नाक, कान हैं। सन्त हमारा ख्याल बाहर से हटाकर अंदर की तरफ जोड़ते हैं; वे हमसे बाहर की लोक-रीति नहीं छुड़वाते।

शादी का मकसद यही है कि किसी के साथ मिलकर अपने जीवन को स्वर्ग बनाना, जिंदगी के सफर को आसान बनाना और एक-दूसरे की इज्जत करना है। हम चार लोगों के बीच जो रस्म करते हैं इसका इतना ही मकसद है कि दूसरे लोगों को यह ज्ञान हो जाए कि ये मियाँ-बीवी हैं। बिना शादी के किसी को बुरी नजर से देखना महापाप है। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

नैन न देखे साध नैन मुंद घालिए।

ऐसी आँखे निकाल दें जो साधु का दर्शन नहीं करती। सभी औरतें और मर्द एक ही मिट्टी के बने हैं। पराई औरत को देखना

गुनाह है इसी तरह पराए मर्द को देखना भी गुनाह है। शादी एक ही बार होती है यह एक लोक-रीति है चाहे आप कितने भी आडंबर कर लें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कड कागज दस्से राव।
देखो लोको ऐहो वडाण मन अंधा नाओ सुजान।।

हम पंडित से पत्री निकलवाते हैं कि कौन सा दिन, वार अच्छा है? पंडित को स्याना समझते हैं। नशहरा में बहुत कमाई वाला जल्लण जट्ट हुआ है, वह परमगति को प्राप्त था। उसकी पत्नी ने कहा कि लड़की जवान हो गई है इसकी शादी करनी है किसी पंडित के पास जाकर लगन मुहूर्त निकलवा लाओ कि कौन सा दिन, वार अच्छा है।

जल्लण जट्ट घर से चल पड़ा। रास्ते में एक जगह लोग रो-पीट रहे थे। उसने पूछा कि यहाँ क्या हुआ है? लोगों ने बताया कि वैद्य का एक ही लड़का था वह परमात्मा को प्यारा हो गया। जल्लण जट्ट ने पूछा, ''क्या वैद्य ने अपने लड़के का कोई ईलाज नहीं किया था?'' लोगों ने कहा कि बहुत ईलाज किया था अपने से ज्यादा अच्छे वैद्य भी बुलाए लेकिन मालिक की मौज।

जल्लण जट्ट आगे गया तो वहाँ ब्राह्मणों का घर था। वहाँ रोना-पीटना पड़ा हुआ था। उसने पूछा कि यहाँ रोना क्यों हो रहा है? लोगों ने बताया कि इसने अभी-अभी काफी पैसे खर्च करके लड़की की शादी की थी लेकिन लड़की विधवा हो गई है ब्राह्मण का दामाद मर गया है इसलिए रोना-पीटना पड़ा हुआ है। जल्लण जट्ट ने कहा, ''क्या ब्राह्मण ने लगन मुहूर्त देखकर शादी नहीं की थी?'' लोगों ने कहा कि देखा तो सब कुछ था लेकिन सब कुछ तो भगवान के हाथ में है।

ये लगन मुहूर्त भगवान ने नहीं हमने अपनी मन-बुद्धि से बनाए है, यह गणित विद्या है। स्याने लोग इससे अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं; हम भ्रम में हैं। जल्लण जट्ट ने घर वापिस आकर अपनी पत्नी को जो देखा-सुना था वही बताया:

वैद्या दे घर पिट्टणा ब्राह्मंण दे घर रंड।
चल जल्लणा घर अपने साहा देख न सन्न।।

यह सब परमात्मा के हाथ में है। कबीर साहब कहते हैं:

वैद्य कहे हों ही भला दारु मेरे वस।
ऐह ते वस्तु गोपाल की जब भावे ले खस।।

बीमारी में डाक्टर से सलाह लेना ईलाज करना अच्छा है इससे शरीर को आराम मिलता है लेकिन आप यह न सोचें कि डाक्टर के पास मौत से बचाने की दवा है।

सन्त यह नहीं कहते कि आप शादी न करें या शादी करना गुनाह है। सन्तमत में अंदर का नक्शा बाहर है। आत्मा दुल्हन और शब्द दुल्हा है। जब तक आत्मा 'शब्द' के साथ शादी नहीं करवाएगी तब तक दुल्हे को क्या पता है कि मेरी कौन सी पत्नी है? मैं इसे किस तरह कमाकर दूँ किस तरह इसका पालन-पोषण करुं। उस मर्द को फिक्र होता है लेकिन शादी का रिश्ता बहुत पवित्र होता है।

अफसोस है कि आजकल हमने ये रिश्ते बिगाड़े हुए हैं। हमारी लड़कियों को ऐसी शिक्षा मिल जाती है कि वे जब तक अपने पति की निन्दा न कर लें और पति अपनी पत्नी की निन्दा न कर ले उनको रोटी स्वाद नहीं लगती।

सन्त हमें बड़ी मर्यादा से बताते हैं कि यह बहुत पवित्र बंधन है। अंदर सच है बाहर रीति-रिवाज है। यह देह का संबंध है अगर

आप देह का संबंध सही अर्थों में नहीं निभाएंगे इसे पक्का नहीं समझेंगे तो अंदर कैसे निभा सकेंगे?

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''आप जिसे देखते हैं अगर उसके साथ आपका प्यार नहीं तो आप अंदर कैसे निभा सकेंगे? आप शब्द गुरु के साथ किस तरह प्यार कर सकेंगे? पहले आपको बाहर मश्क करनी पड़ेगी।''

इस बार जब मैं साँपला गया तो एक अंग्रेज ने अंदर के बारे में सवाल किया। ये लोग हमारी तरह बाहर की बातें नहीं पूछते, जो पूछते हैं अंदर का ही पूछते हैं। उसने मुझसे पूछा कि किस तरह आत्मा अंदर जाती है गुरु का पता किस तरह लगता है? मैं ऊपर चौबारे पर खड़ा था। हमारे दो प्रेमी माईकल और शैली हैं, उन दोनों मियाँ-बीवी का आपस में बहुत प्यार है वे दोनों दीवार के साथ सैर कर रहे थे। माईकल लम्बा और शैली छोटे कद की है। माईकल तेज चल रहा था, शैली उसके पीछे-पीछे दौड़ रही थी।

मैंने उसे बताया कि जैसे माईकल और शैली एक-दूसरे के साथ आगे-पीछे चल रहे थे शैली उसका साथ नहीं छोड़ रही थी, अंदर यही कुछ है। शब्द गुरु आगे होता है आत्मा पीछे होती है। आत्मा पत्नी है और शब्द इसका पति है। जब तक इस पत्नी को कोई जोड़ने वाला न मिले तब तक हम सांसारिक रिश्ता भी कम ही कायम करते हैं, हमारे माता-पिता को कुछ तय करना पड़ता है।

हमें खुशी है पिछली बार इंग्लैंड वाले मतई साहब और हैप्पी जी की पौत्री की **आदर्श शादी** हुई थी। आज भी उसी तरह की आदर्श शादी है जिसमें कोई देने-लेने वाला नहीं है कि मैंने इतना लेना है। मेरे पास कई ऐसे भी लोग आ जाते हैं जो कहते हैं कि हमने शादी में इतने लाख देने हैं या लड़के वाले कहते हैं कि हमने

तो इतने लाख लेने हैं ऐसे तो जानवरों का सौदा होता है। ऐसे लोग लड़का बेचते हैं, लड़की वाले बेचारे को करना ही पड़ता है। प्यारेयो! किसी के देने से पेट नहीं भरता। आप परमात्मा से मांगें जो देकर पछताता नहीं। हम जब मांगना शुरू करते हैं तो अपने घर को नर्क बना लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

मान गया आदर गया, नैनन गया स्नेह।
ये तीनों ओदों गए, जद आख्या कुछ दे।

आप जिस घर से मांगेगे उस घर में आपका सम्मान नहीं होगा। जब कुछ मांगते हैं तो मान, आदर और आँखों का स्नेह चला जाता हैं।

हमें खुशी है कि इस रिश्ते को तय होने में ज्यादा समय नहीं लगा क्योंकि संयोग बहुत जबरदस्त होता है। जब यहाँ **आदर्श शादी** हुई तो हमारे चोपड़ा साहब के दिल में भी आया कि अगर मुझे भी कोई ऐसी जगह मिल जाए तो मैं अपने लड़के की ऐसी आदर्श शादी के लिए तैयार हूँ। मैंने कहा, ''अच्छा देख लेंगे।''

थोड़ी देर बाद लड़की वाले आ गए, उन्होंने कहा कि आपको इस लड़की का फिक्र है फिर उन्होंने सुरेश के बारे में पूछा कि वह आपकी निगाह में कैसा है? मैंने कहा कि जब यह छोटा था तो स्कूल जाते हुए मुझे नमस्कार करके जाता था। बच्चा पहले से ही बहुत होनहार और अच्छा है।

मैंने चोपड़ा को बुलाकर कहा कि अब बात कर क्या मांगता है? मुझे खुशी हुई कि चोपड़ा ने जो वचन किया था वह उस पर कायम है। आशा करते हैं कि ये दोनों परिवार मिलकर अपनी गृहस्थी जिंदगी को प्यार से चलाएंगे और संगत से भी जुड़े रहेंगे।

आवहु भैणे गलि मिलह, अंकि सहे लड़ीआह।।

मैंने पहले ही बताया था कि अंदर असल है बाहर नकल है। बाहर जो कुछ भी रीति-रिवाज है ये सब कुछ अंदर है। गुरु नानकदेव जी ने भी हिसाब-किताब करने वाले देवता को कहीं धर्मराज तो कहीं मुन्सिफ कहा है। फर्क इतना है कि अंदर असल है वहाँ न्याय होता है वहाँ किसी की सिफारिश नहीं होती।

जब गुरु नानकदेव जी मक्का गए तो आपसे सवाल किया कि क्या गुरु वालो को ऐब करने की छूट है। आपने प्यार से कहा कि आप अपनी पवित्र किताब कुरान में देखें कि मौहम्मद साहब अपने दस नाखूनों की मेहनत से रोजी-रोटी कमाते थे, आप व्यापार का सौदागरी पेशा करते थे। मौहम्मद साहब के एक सतसंगी ने चोरी की तो मौहम्मद साहब ने उसे सजा दी। वहाँ आपका एक और

मुसलमान सतसंगी खड़ा था उसने कहा कि आप अपने सतसंगी को ही सजा दे रहे हैं। मक्का में तो पहले ही आपकी बहुत लोग विरोधता करते हैं; अब यह विरोधियों के साथ मिल जाएगा।

मौहम्मद साहब ने कहा कि मुझे इस बात का कोई फिक्र नहीं कि यह विरोधियों के साथ मिल जाएगा। मैंने सच का होका देना है, मैं चोर मुसलमानों का गुरु नहीं मैं तो अच्छे मुसलमान बनाने के लिए आया हूँ। चाहे कोई मेरी विरोधता करे चाहे शाबाशी दे। जब सन्त सच का होका देते हैं तो जिन लोगों की दुकानदारी खराब होती है उन्हें बुरा लगता है।

पंडित भेख पेट के मारे वे सन्तन पर करते तान।
हितकर सन्त उन्हें समझावें वे माने नहीं माने आन।
उनको चाह मान और धन की परमार्थ से खाली जान।।

बेशक पंडित, भाई और पादरी की आपस में नहीं बनती लेकिन जब सन्तों की निन्दा का सवाल आता है तो ये सारे एक हो जाते हैं। आप कभी भी किसी को अपनी प्रशंसा करने का मौका न दें। सिफत ही हमें भजन करने से हटाती है, सिफत की वजह से ही हम फूलकर बैठ जाते हैं कि हमारी बहुत प्रशंसा होती है फिर हम अपने अंदर झाँककर नहीं देखते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नानक ते नर असल खर जे बिन गुण गरब करन्त।

असली गधे वे हैं जिनके अंदर वह वस्तु नहीं होती लेकिन लोग ऐसे ही तारीफ करने लग जाते हैं फिर हम फूले नहीं समाते कि पता नहीं हमारे अंदर कितने गुण हैं! गुरु नानकदेव कहते हैं:

हक पराया नानका उस सूअर उस गाय।
गुरु पीर हामां तां भरे जे मुर्दार न खाए।।

मैं अपने पिछले गांव का वाक्या बताया करता हूँ। ज्ञानी को यहाँ के बहुत से लोग जानते हैं, उसका दामाद भी यहाँ बैठा है। हम खेत में गए हमारे चने के पाँच मुरब्बे थे। वहाँ एक गरीब की चार-पांच किल्ले जमीन थी। मैंने ज्ञानी से कहा कि साग बहुत अच्छा लग रहा है तू तोड़ ले। ज्ञानी जी ने अपने पाँच मुरब्बों में से साग नहीं तोड़ा और उस गरीब के खेत से साग तोड़ने लगा। मैंने ज्ञानी से कहा, ''ज्ञानी जी! बड़े अफसोस की बात है कि वह एक गरीब है और हमारी डेढ़ सौ किल्ले जमीन है फिर भी तू उसके खेत से साग तोड़ रहा है।'' उसने कहा कि साग की भी कोई चोरी होती है। मैंने कहा कि भगवान ने अपने खेत में बहुत कुछ दिया है। तू नहीं देखता वह तुझे अंदर से लानते दे रहा होगा।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम छोटी-छोटी बातों की तरफ तवज्जो नहीं देते अगर कोई हिन्दु पराया हक खाता है तो वह गाय का माँस खाने के बराबर है अगर मुसलमान पराया हक खाता है तो सूअर खाने के बराबर है। गुरु पीर हामी तभी भरेंगे अगर हम उनकी शिक्षा पर चलेंगे। कबीर साहब कहते हैः

गुरु विचारा क्या करे जे सिक्खां में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।।

मैंने बताया था कि अंदर आत्मा पत्नी है और शब्द पति है। गुरु नानकदेव जी महाराज अपने शब्द में बाहर का नक्शा खींचकर रखते हैं कि जिस तरह लड़की की शादी होती है तो वह दूसरी सहेलियां से पूछती हैं कि आओ बहनों! हम अपने पति की बातें करें क्योंकि उन्हें भी पति मिला हुआ है।

जिस तरह सतसंगन आत्माएं इकट्ठी होती हैं तो वे दूसरी आत्मा से पूछती है क्योंकि दोनों को नाम मिल गया। वे एक दूसरी

से पूछती है कि तू रोज भजन पर बैठती है कोई रस आता है, कभी नागा तो नहीं डालती? इसलिए हम सतसंगी से पूछकर खुश होते हैं क्योंकि वह भजन की बात करेगा। सच्ची सहेलियां वे हैं जो हमारे साथ जाएंगी, दुनियावी सहेलियों का यहीं का प्यार होता है।

मिलि कै करह कहाणीआ संम्रथ कंत कीआह।।

हमारा इंसानी जिस्म सीमा के अंदर है लेकिन गुरु साहब अंदर इशारा करते हैं कि आओ! मिलकर समर्थ गुरु की कहानियां करें। समर्थ कंत वह परमात्मा है, वह जो चाहे कर सकता है। हमारी मौत-पैदाईश उसके हाथ में है और मान-आदर देना भी उसके हाथ में है। जब वह अंदर प्रकट हो जाता है तो वह हमारा आगा-पीछा ढ़क लेता है।

साचे साहिब सभि गुण, अउगण सभि असाह।।

जो आत्मा अंदर जाती है वह कहती है कि अंदर का पति गुणों से भरपूर है। वह इसलिए हम पर खुश नहीं होता क्योंकि हम अवगुणों से भरी हुई हैं। हम जब तक अवगुण नहीं छोड़ती वह समर्थ पति किस तरह खुश होगा?

करता सभु को तेरै जोरि।।
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि।।

शादी से पहले लड़की गुड्डी-पटोलो से खेलती है, उसका भाई-बहनों से प्यार होता है। माता-पिता लड़की को दूसरे की अमानत समझकर उसका पालन करते हैं, उन्हें पता है कि एक दिन हमने इसकी शादी करनी है। जब शादी हो जाती है उसे कहने की जरूरत नहीं पड़ती कि तू सखी-सहेलियों, बहन-भाईयों का

प्यार छोड़ दे। एक मर्द के मिलाप से ही वह सब कुछ भूल जाती है। धीरे-धीरे उसका प्यार ससुराल में लग जाता है फिर सखी सहेलियों को कौन याद करता है, गुड्डी-पटोलों को कौन संभालता है?

सन्त-सतगुरु जानते हैं कि हम जीव विषय-विकारों में उलझे हुए हैं। सन्त हमें अंदर ही नाम के साथ जोड़ते हैं। जो लोग नाम की कमाई करने लग जाते हैं धीरे-धीरे उनका मन अपने आप ही उन्हें खुष्क लगने लग जाएगा।

कोडा राक्षस इंसानों को खाता था। जब गुरु नानकदेव जी ने उसे अंदर 'शब्द' का भेद दिया तो वह महात्मा बन गया। कोडा राक्षस गुरु नानकदेव जी का प्रतिनिधि बना। गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तू जिसे नाम देगा मैं उसकी संभाल करूंगा।''

इसी तरह बहुत से लोग महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी के चरणों में आकर भले मानस बने। हर सन्त के पास इस तरह के लोग आ जाते हैं जो फिर पाप करना छोड़ देते हैं। हम जैसे-जैसे पहाड़ की तरफ जाएंगे हमें ठंड मिलनी शुरू हो जाएगी। इसी तरह जैसे-जैसे हम नाम जपना शुरू करते हैं तीसरे तिल पर एकाग्र होते हैं तो हमें अपने आप ही दुनिया के रस फीके लगने लग जाते हैं।

जब लड़की अपने पति का पल्ला अच्छी तरह पकड़ लेती है तो पति को शर्म है कि मैं ही इसकी इज्जत का रखवाला हूँ। इसी तरह जब हम गुरु का पल्ला पकड़ लेते हैं उसके दिए उपदेश पर चलते हैं तो उसे हमारा फिक्र होता है अगर हम गुरु की निन्दा करते हैं तो गुरु का क्या कसूर है।

गुरु बेचारा क्या करे जे सिक्खन में चूक।
अंधे एक न लग्गी ज्यों बाँस बजाई फूँक।।

गुरु शब्द का भेद देता है फिर आत्मा अपने ख्यालों को सब तरफ से हटाकर शब्द के साथ जुड़ जाती है क्योंकि पहले हमने पैंतिस सौ रब बनाए होते हैं। हम कभी पत्थर को, कभी पानी को, कभी कब्रों को पूजते हैं अगर हम नाम लेकर पुरानी कब्रें खोदेंगे तो यह एक व्याभिचारिणी औरत जैसा होगा।

जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणी।।
सहज संतोखि सीगारीआ, मिठा बोलणी।।

जिन आत्माओं ने पति-परमात्मा को खुश कर लिया है आप उनसे पूछें कि आपने किस तरह अंदर परमात्मा को खुश किया है? वे आपको बताएंगी कि परमात्मा ने जो दे दिया हमने उसमें सब्र कर लिया अगर परमात्मा भूखा रखता है तो सब्र है अगर पेट भरकर देता है तो उसकी दया है, मेहरबानी है। हमें आए की खुशी नहीं गए का गम नहीं। ऐसा हम कह जरूर लेते हैं लेकिन बहुत मुश्किल होता है।

यही सिफतें गृहस्थ में भी होनी चाहिए। ऐसा नहीं कि घर में खाने के लिए गेहूँ न हों और औरत कहे कि मुझे इतने सूट चाहिए। मुझे शहर में, गाँव में, बाहर के मुल्कों में, अमीरों और गरीबों से मिलने का मौका मिलता है। बहुत सी लड़कियों के पास बीस-बीस सूट और साड़ियां होती हैं वे फिर भी सोचती हैं कि मेरी सारी साड़ियां और सूट तो मौहल्ले वालों ने देख लिए हैं। उस गरीब की तनख्वाह कम है अगर जमींदार है तो आमदनी कम है तो वह फिर यही कहता है कि हम इस मौहल्ले को बदलकर किसी और मौहल्ले में चल पड़ते हैं। प्यारेयो! क्या यह अपने मर्द को खुश करने का तरीका है?

मैं सीमाप्रान्त में रहा हूँ। वहाँ पठानियों ने अपने पतियों की नाक में दम किया हुआ था कि तू चाहे चोरी कर, डाका डाल लेकिन हमारे कपड़ों की तलब को पूरा कर। हम परमार्थ में तभी कामयाब होगें जब हम मीठा बोलेंगे, प्यार से पेश आएंगे। परमात्मा ने हमें हमें जो दे दिया उसमें संतोष करें ।

मैं अपने बचपन की बात बताया करता हूँ कि पंजाब में हमारे खेत में बहुत सरसों हुआ करती थी। सरसो पकी हुई थी मालिक की मौज ओले पड़ गए, दिल में बहुत रोष हुआ। जब मैंने दूसरी तरफ देखा तो हमारे चाचा साहब ने कीकर के पेड़ के साथ फाँसी लगा ली। मेरे दिल में ख्याल आया कि जिंदगी में कई बार फसल आती है और कई बार मारी जाती है।

कई बार मेरे पास व्यापारी भी आ जाते हैं। व्यापार में घाटा पड़ जाता है तो उनसे कहते हैं, ''प्यारेया! जब तू संसार में आया था उस समय माँस का एक लोथड़ा था। तुझे जो कुछ मिला है यहाँ पर ही मिला है अगर हिम्मत करेगा तो आगे भी मिलेगा।'' उस समय हम परमात्मा में नुख्स निकालते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु बतावे साध को, साध कहे गुरु पूज।

वही साधु है जो साधना करके दसवें द्वार में पहुँच गया है। जहाँ पहुँचकर हमारी सब आशाएं सुन्न हो जाती हैं। दसवें द्वार में पहुँचकर ही पूरा सन्यासी बनता है। उसे साधु या सन्यासी कुछ भी कह लें। हम वहाँ पहुँचते तो नहीं लेकिन सन्यासी बनने का अहंकार हो जाता है इसलिए आत्मा से तीनों पर्दे उतारकर दसवें द्वार में पहुँचें। आपको शब्द का जो रास्ता बताया गया है वह करें।

पिरु रीसालू ता मिलै, जा गुर का सबदु सुणी।।

परमात्मा ने तुझे शब्द के साथ जोड़ा है। तेरे अंदर परमात्मा तब प्रकट होगा जब तू उसके दिए हुए शब्द को सुनेगा।

केतीआ तेरीआ कुदरती, केवड तेरी दाति।।
केते तेरे जीअ जंत, सिफति करहि दिनु राति।।

अब आत्मा उस पति परमात्मा से कहती है, ''मैं तेरी क्या सिफत करूं तेरी कितनी दातें हैं। तू जिस पर दया करता है उसे कमी नहीं रहने देता। तुझे फिक्र है कि मैंने इसे क्या देना है! कितने ही जीव-जंतु हैं जिन्हें तू रिजक दे रहा है।''

प्यारेयो! इंसान कितने-कितने मकान बनाता है, कितना फिक्र करता है। पशु-पक्षियों के कौन से जखीरे हैं? पक्षी की चोंच ही होती है, परमात्मा उसे भी देता है। पत्थर में कीड़ा होता है कहीं से भी निकलने का रास्ता नहीं होता, परमात्मा उसे वहाँ भी रिजक देता है। जब हम अंदर दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं तब पता लगता है कि उस पति की क्या कुदरत है? वह जिसके अंदर प्रकट हो जाता है कोई उसकी कीमत नहीं पा सकता।

केते तेरे रूप रंग, केते जाति अजाति।।
सचु मिलै सचु उपजै, सच महि साचि समाइ।।

उसने किस तरह की रचना रची है, कितने रूप हैं। एक बिल्ली की दूसरी बिल्ली से शक्ल नहीं मिलती। एक आदमी की दूसरे आदमी से शक्ल नहीं मिलती। आप सैंकड़ो हजारों हाथ की लकीरें इकट्ठी कर लें एक-दूसरे से मेल नहीं खाती। पशु के साथ पशु नहीं मिलता। लोग भेड़ों की निशानी के लिए उन पर रंग डालते हैं।

हे परमात्मा! तेरे कितने रूप-रंग है? तू कितनों के अंदर बैठा है ये एक-दूसरे से मेल नहीं खाते। तू कितनी जातियों में बैठा है

फिर भी तू अजात है। किसी भी जाति को यह फक्र नहीं कि मुझे हिन्दु मिल सकते हैं या मुसलमान नहीं मिल सकते।

जाति पाति पूछे न कोय हरि को भजे सो हरि का होय।

सुरति होवै पति ऊगवै, गुर बचनी भउ खाइ।
नानक सचा पातिसाहु, आपे लए मिलाइ।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें दुनियावी रिश्ते को अंदर ढ़ालकर बताया है कि आत्मा पत्नी है और शब्द पति है। गुरु इन्हें जोड़ने वाली एक कड़ी है। वह शब्द हमारे और परमात्मा के बीच एक कड़ी बनकर खड़ा हो जाता है। जो लोग सन्त-सतगुरु के कहे मुताबिक अपना जीवन ढ़ाल लेते हैं वे जीवन में ही अपनी तरक्की कर लेते हैं। परमात्मा ने ये सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है। कहीं दिल में यह ख्याल हो कि सन्त कौन सी फीस लेते हैं चलो हम नाम ले आएं! आपके अंदर इच्छा ही नहीं होगी चाहे आप रोज ही उनके पास जाते रहें।

मैं महाराज सावन सच्चे पातशाह का वाक्या सुनाया करता हूँ कि आपका एक दोस्त किशन सिंह था। वह रोज पांच छह घंटे बानी पढ़ता था। महाराज सावन का विचार हुआ कि यह बड़ा प्रेमी है इसे बाबा जयमल सिंह जी से नामदान दिलवाया जाए। महाराज सावन सिंह जी उस समय नौकरी करते थे, आप अपने काम पर चले गए। आप बाबा जी से कहकर गए कि किशन सिंह आएगा आप उसे नामदान दे देना। बाबा जी ने कहा अच्छा भई। किशन सिंह बाबा जयमल सिंह जी से बानी के बारे में बातें करने लगा।

आप जानते हैं अगर सन्तों को कोई सुनाए तो वे चुप करके सुनते जाते हैं। हम सोचते हैं कि सन्त बानी ही सुनाते हैं वह बानी

हम भी जानते हैं। प्यारेयो! हमें पता नहीं कि सन्त अंदर से कुछ और भी हैं। एक आदमी नक्शा तो पूरा जानता है लेकिन उसने वह जगह नहीं देखी होती।

मैं बताया करता हूँ कि एक आदमी भौगोलिक विद्या का माहिर है वह सारे मुल्कों की निशानी एक मिनट में बता देगा लेकिन जिसने वह जगह जाकर देखी है; वह सच्चा है। बाबा बिशनदास जी जैतो के पास रहते थे, कसूर उसके नजदीक ही पड़ता था। जब लोग आकर ऐसी बाते करते तो आप कहतेः

ऐवे झूठियां मिश्र दियां देवें खबरा,
देखया जाके शहर लाहौर है ना।

आप कहते, ''तूने लाहौर तो देखा नहीं और दूसरे मुल्क की खबरें देता है।'' इसी तरह हम मन-इन्द्रियों के गुलाम लोगों को किस्से-कहानियां सुना-सुनाकर कहते हैं कि आप इस तरह करो तो रब मिल जाएगा अगर उनसे पूछे कि भाई तेरी चढ़ाई कहाँ तक है, क्या तुझे कभी शान्ति मिली?

हमारे मस्ताना जी यहाँ बैठे हैं। इन्हें रायसिंहनगर में एक महात्मा मिला। उस महात्मा के साथ अपने आपको सूरमा कहलवाने वाले चार-पाँच लोग भी थे। मस्ताना जी ने उस महात्मा से कहा, ''बाबा शान्ति कर।'' उसने कहा कि शान्ति कौन सी कुतिया है? प्यारेयो! साधु हो जाते हैं शान्ति तभी आएगी जब अंदर जाएंगे।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा हुआ है। जब परमात्मा हमें अंदर से बख्शना चाहेगा कि अब मैंने इसे दुनिया में चक्कर नहीं लगवाने फिर वह हमें किसी महात्मा के पास ले जाएगा तभी हमें महात्मा के ऊपर

ऐतबार आएगा फिर हमारे अंदर नाम लेने की इच्छा होगी। नहीं तो आप रोज ही बैठे रहें आपके अंदर इच्छा ही नहीं होगी।

जिन मस्तक धुरो हरि लिखया तिन सतगुरु मिलया।
अज्ञान अंधेरा कटया ज्ञान घट बलया।।
हर लद्धा रतन पदार्थों फिर बोहड़ न चलया।
नानक नाम अराध अराध हर मिलया।।

गुरु नानकदेव जी महाराज ने हमें बड़े प्यार से शब्द सुनाया है कि अराधना करेंगे तभी हम कामयाब होंगे। हमारा भी फर्ज बनता है कि गुरु नानकदेव जी की शिक्षा पर चलकर अपने जीवन को सफल बनाएं।

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु।।

हमारे हिन्दुस्तान में सन्त-महात्मा और आम कवि लोग अपनी विरह की पीड़ा को *आठ वारों* या *बारह माहा* के जरिए जाहिर करते रहे हैं कि हमें परमात्मा के साथ कितना दर्द, कितना प्यार है? अगर परमात्मा नहीं मिलता तो हमारी क्या हालत होती है। गुरु साहब ने *बारह माहा* की तुलना मनुष्य जन्म से की है। इंसान का जामा बहुत अमोलक है अगर यह मनुष्य जामा एक बार हाथ से निकल गया तो दोबारा हाथ नहीं आएगा। हमें इस जामें में क्या करना चाहिए। हर महीने में यही संदेश है। मैंने बताया था कि आज बैसाखी का बहुत पवित्र दिन है।

गुरु साहब बहुत प्यार से कहते हैं कि प्रेम-प्यार परमात्मा है। परमात्मा एक समुद्र है, आत्मा उसकी लहर है। समुद्र भी पानी है लहर भी पानी है और बूंद भी पानी है। परमात्मा समुद्र है, गुरु उसकी लहर है और आत्मा एक बूंद है लेकिन फर्क सिर्फ बिछोड़े

का है। यह बूंद इसलिए कहलाती है क्योंकि यह उससे बिछड़ गई थी जो बूंद लहर के सुपुर्द हो जाएगी वह समुंद्र में समा जाएगी।

सन्त-महात्मा उस मालिक के समुंद्र की लहरें हैं। जितना समय परमात्मा की तरफ से हुक्म होता है ये लहरें उठती हैं। उन्हें मालिक की तरफ से हुक्म होता है कि तूने इतने लोगों को नाम देना है। उन्हें न आने की खुशी है न जाने का गम है।

घल्ले आए नानका सद्दे उठ जाए।

आप कहते हैं, ''जो आत्माएं परमात्मा से बिछड़ गई है उनकी आयु कैसे व्यतीत होती है? हम दुनिया के पदार्थों के लिए दिन-रात तड़पते हैं, सारी-सारी रात जागते हैं अगर मामूली सा घाटा पड़ जाए तो क्या हालत होती है? क्या कभी कोई उस प्यारे परमात्मा की खातिर रात को उठा, रोया या यह कमी महसूस की। कभी बैठकर सोचा! मैं इस जिंदगी से पहले कहाँ था और आगे मैंने कहाँ जाना है?''

मुझे संसार में जाने का मौका मिला है। न्यू हैम्पशायर-अमेरिका की यूनिवर्सिटी में किसी योगी के एक चेले प्रिंसिपल ने वहाँ मेरे बोलने का इंतजाम किया। वहाँ मैंने यही बोला कि इंसान को सबसे पहले तीन चीजों का ध्यान होना चाहिए कि मैं इस दुनिया से पहले कहाँ था, अब मैंने क्या करना है और मैं आगे कहाँ जाऊँगा? अगर इंसान ने ये तीनों मसले हल कर लिए तो इंसान और भगवान में कोई फर्क नहीं।

हिन्दुस्तान के सारे प्राचीन ग्रंथ पुनर्जन्म को मानते हैं कि जीव कई बार ऊँचे जामों तो कई बार नीचे जामों में जाता है। उस प्रिंसिपल के कई दुनियावी सवाल थे। कई बार सवाल करने वाला

यह नहीं सोचता कि अगर उसने मुझसे वही सवाल किया तो मैं क्या जवाब दूंगा? उसने जो सवाल मुझसे किया मैंने वही सवाल उससे कर दिया? उसने सबके सामने अपने कान पकड़े।

अमेरिका में ऐसा होता है कि आपको भाषण देने के बाद रूकना पड़ता है क्योंकि कईयों ने सवाल करने होते हैं। मालिक की मौज वहाँ कोई नहीं रूका। रसल प्रकिंस हँसने लगा। इसके बाद मैंने कानून ही बना दिया कि मेरे पास सीमित समय है, मैं सतसंगियों के अलावा कहीं नहीं जाऊंगा।

महाराज सावन सिंह जी भी मिसाल दिया करते थे कि अमेरिकनों की जुबान नहीं रूकती और पंजाबियों के हाथ नहीं रूकते। हम इससे पहले कहाँ थे इसका पता तब लगता है जब हम पारब्रह्म में पहुँचते हैं, अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। हमें यहाँ क्या करना चाहिए? इंसान शराब-कबाब के लिए, बच्चे पालने के लिए इस संसार में नहीं आया। बच्चे, पति, पत्नियां हर योनि में मिलते रहे हैं।

परमात्मा ने हमें यह इंसानी जामा थोड़े समय के लिए अपनी भक्ति का एक मौका दिया है। हम भक्ति करेंगे तो अपने आगे का देख लेंगे कि हमने कहाँ जाना है? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मोया जित घर जाईये, तित जिवंदया मर मार।

आपने मरकर जिस घर में जाना है वहाँ जीते जी जाकर देख सकते हैं कि मेरा कैसा घर है, कैसा ठिकाना है? आगे मेरा वलि वारिस कौन होगा? जो उस परमात्मा से बिछुड़ गए हैं उनकी जिंदगी की रात कैसे निकलती है?

हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु।।

जब से यह दुनिया बनी है हम किसी न किसी रूप में इस संसार में आते हैं। चाहे पशु, पक्षी, कुत्ता, साँप या इंसान बनकर आए अगर हमें नाम मिला होता, गुरु मिला होता; हमने भक्ति की होती तो हम बार-बार इस दुखी दुनिया में क्यों हाजिर होते? चोर के लिए जेल है, भले लोगों के लिए जेल नहीं अगर हम भक्ति करके परमात्मा में समा जाएं तो हमें इस तन के पिंजरे में नहीं आना पड़ेगा।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''आपका असली सज्जन कौन है? सज्जन वह है जो दुख के समय में काम आए लेकिन हम उसे विसार देते हैं।'' अफसोस! मौत के समय हम देखते हैं कि बच्चे पास में बैठे होते हैं बूढ़ा कराह रहा होता है। बच्चे ज्यादा से ज्यादा उस बुजुर्ग को पानी दे देंगे, डाक्टर से दवाई लाकर दे देंगे लेकिन आगे के लिए कोई किसी का मददगार नहीं। माया ने ब्रह्मा, विष्णु, शिव और बड़े-बड़ो को धोखा दिया। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

ऐके माई जुगत बेआई तीन चेले परवान।
इक संसारी इक भंडारी इक लाए दीवान।
ओह वेखे ओहना नदर न आवे बहुता ऐहो वडान।
आप निरंजन होया न्यारे भार सृष्टि का इन पर डारे।।

आप कहते हैं कि काल ने ब्रह्मा को जन्म दिया। ब्रह्मा ने पाताल की खोज की लेकिन सतपुरुष ने उसे दर्शन नहीं दिए अगर सतपुरुष मिलता तो उसकी आज्ञा लेता, वह भ्रम में पड़ गया। ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों उस शक्ति माया के पुत्र हैं। ये तीनों परमात्मा के हुक्म में अपना-अपना काम करते हैं लेकिन ये भी मौत पैदाईश से ऊपर नहीं। ये सभी देवी-देवता रचना का अंग हैं फर्क इतना है कि इनकी उम्र लंबी हैं, इंसान की उम्र थोड़ी है।

देवी-देवताओं को परमात्मा तो देखता है लेकिन ये देवी-देवता परमात्मा को नहीं देख सकते। हम इनको बड़ा समझकर पूजते हैं। परमात्मा को देखने और मिलने का हक सिर्फ इंसान को है। परमात्मा ने ये कारिन्दे थापे हुए हैं जैसे जमींदार खेती करता है उसी तरह ब्रह्मा को सृष्टि की रचना करने पर लगाया है, विष्णु की ड्यूटी पालन करने में लगाई है और शिव को संहार करने पर लगाया है कि तुमने ये काम करना है।

आप गीता पढ़कर देख लें! उसमें सबकी उम्रें लिखी हुई हैं। भागवत में कृष्ण भगवान उद्धो से कह रहे हैं कि यह कीड़ा कई बार स्वर्गों का राजा और ब्रह्मा हो चुका है। स्वर्ग के राजा को भी कीड़ा बनना पड़ता है तो हम किस बाग की मूली हैं! हमारा सज्जन वह परमात्मा है जिसके साथ हमें सिर्फ सन्त ही जोड़ते हैं; हम माया के धोखे में आए हुए हैं।

पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु।।

हम पति, पत्नी, पुत्र, पौत्र और धन का अहंकार करते हैं लेकिन मौत आने पर कोई पुत्र, पौत्र, पति, पत्नी, धन मदद नहीं करते। जिस गुरु ने नाम दिया है वह देह नहीं, वह अविनाशी है नाश से रहित है। गुरु हमें बाहर नाम के साथ जोड़ता है और अंदर के मंडलो में हमारी मदद करता है, यह बड़ी अचरज बात है।

पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु।।

हमारे अनेकों ही बड़े-बुजुर्ग इनमें खप-खपकर हाथ झाड़कर चले गए हैं इसी तरह हमने चले जाना है। कबीर साहब कहते हैं:

मुट्ठी भींचकर जन्म लिया है हाथ पसारे जाओगे।
कहत कबीर सुनो भई साधो इक नाम बिना पछताओगे।।

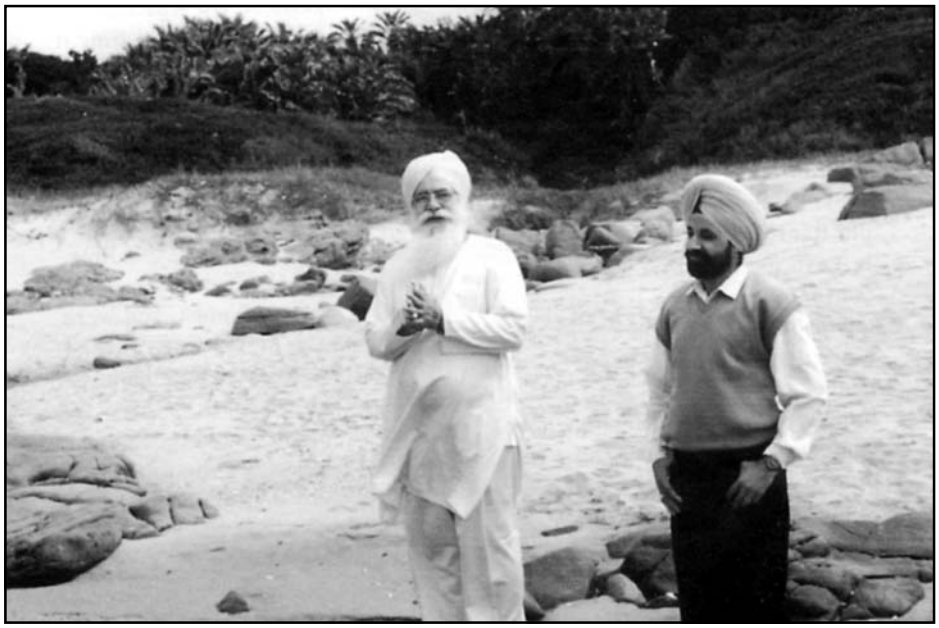

इकसु हरि के नाम बिनु अगै लअहि खोहि।।
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ।।

गुरु के उपदेश को भुलाकर कोई आपकी मदद करने वाला सिफारिश करने वाला है? गुरु प्रभु का संदेश लेकर हमारे पास आता है। हम संदेशची से भी प्यार करते हैं कि वह हमारे प्यारे का संदेश लेकर आया है। अगर हम उसे भुलाएंगे उसके बताए हुए उपदेश पर नहीं चलेंगे तो उसके बगैर है कोई?

प्रीतम चरणी जो लगे तिनकी निरमल सोइ।।

जिन्होंने गुरु को प्रकट कर लिया, जो उस गुरु के चरणों में लग गए; उनकी पवित्र शोभा है। मैं कहा करता हूँः

किसी काम का थे नहीं कोई न कौडी दे।
कृपाल सिंह सतगुरु मिलया भई अमोलक देह।।

प्यारेयो! जो गुरु कहता है जो उस पर चल पड़े वे अमोलक हो जाते हैं। जिस शरीर में वह आत्मा है वह शरीर भी अमोलक हो जाता है। देखने वाला भी उस देह-शरीर को प्यार से देखता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

मैं देख देख न रजहां गुरु सतगुरु देहा।

आप कहते हैं, ''मैं अपने गुरु रामदास की देह को देख-देखकर तृप्त नहीं होता।'' मैंने महाराज सावन सिंह जी को जिस तरह हँसते-हँसते देखा था मैं वह भूल नहीं सका।

परमात्मा कृपाल हँसते-हँसते अमर निशानी दे गए। यह महाराज सावन सिंह जी का वर था कि वह ताकत तेरे पास खुद ही आएगी। ब्रह्मांड पलट सकता है, सन्त का वाक नहीं पलटता लेकिन हममें श्रद्धा होनी चाहिए। मैं बताया करता हूँ कि मैं बचपन से ही महाराज सावन सिंह जी का जन्मदिन मनाता रहा हूँ।

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ।।
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने एक-एक महीने को मनुष्य जन्म के साथ तसवीह देकर बयान किया है। बैसाख का महीना उनके लिए पवित्र है, सहायमान है लेखे में है जिन्हें कोई पूर्ण महात्मा मिल गया। उन्होंने श्रद्धा से महात्मा की संगत की महात्मा ने दया करके उन्हें नाम दिया और वे रास्ते पर चल पड़े।

गुरु साहब ने इस शब्द में हमें जो कुछ समझाया है हमारा फर्ज बनता है कि हम उस पर चलकर अपने जीवन को पवित्र बनाएं। परमात्मा ने हमें इंसानी जामें का बहुत सुंदर मौका दिया है, इससे फायदा उठाएं। ***

DVD - 370

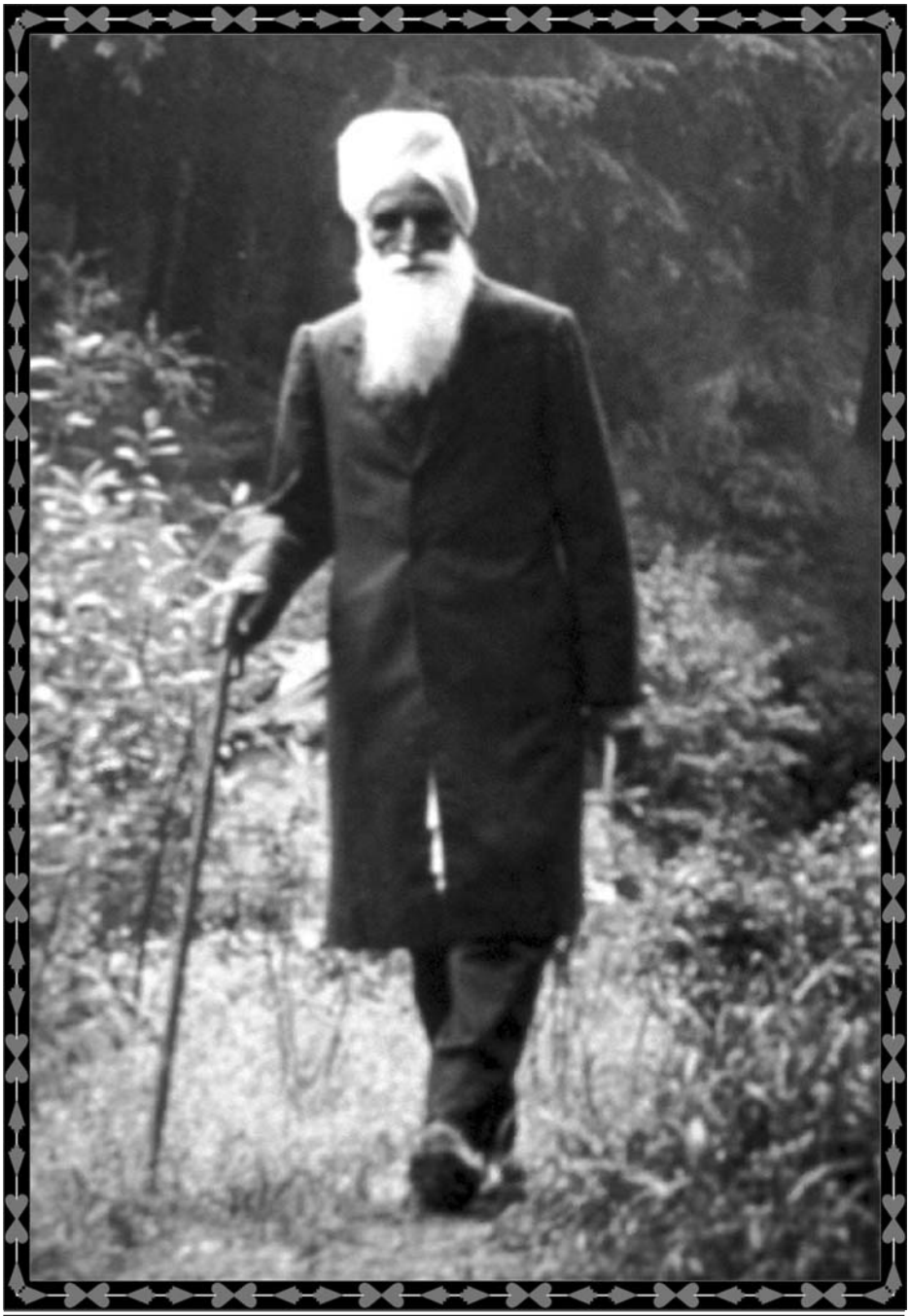

सावन प्यारे बक्शन हारे

सावन प्यारे बक्शन हारे, दु:खियां दे दर्द निवार दयो, (2)

1. रूहां सड़दियां तपदियां साडियां, (2)
अमृत प्याके ठार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

2. असीं भुल्ल गए तेरे नाम नूं, (2)
साडी बिगड़ी नूं आ के सवार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

3. बेड़ा सागर विच ठिल गया, (2)
बनो मल्लाह ते तार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

4. दया करो नाम जपा लवो, (2)
साडी होमैं हंगता नूं मार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

5. हत्थ बन अरजां हैं मेरियां, (2)
गरीब 'अजायब' दी सार लयो, (2)
सावन प्यारे .....

धन्य अजायब

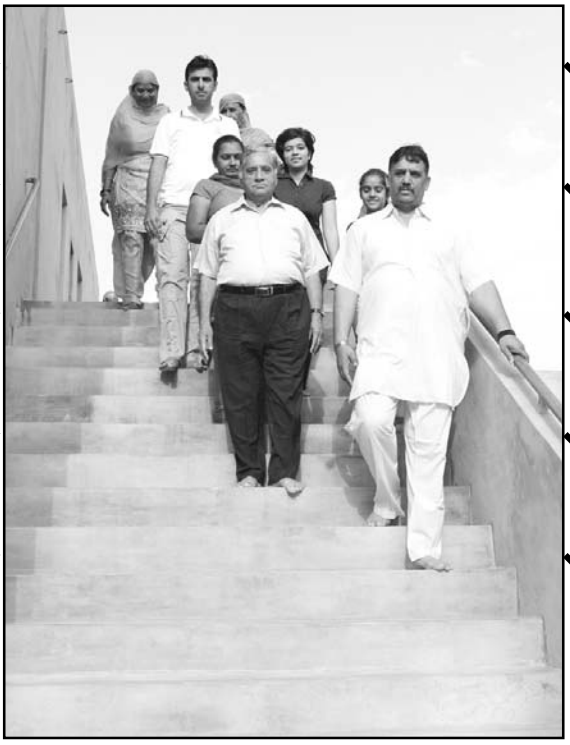

गुरु प्यारी साध संगत जी,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से इस साल भी दिल्ली में 16,17 व 18 मई 2014 को सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सन्तों के वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार (नज़दीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

राकेश शर्मा - 9810212138 : सोनू सरदाना - 9810794597:सुरेश चोपड़ा - 9818201999